CBSE Class 9 Social Science Important Questions Economics Chapter 1 पालमपुर गाँव की कहानी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1.
ग्रामीण क्षेत्र में अधिकांश जनसंख्या किस कार्य में लगी हुई है?
उत्तर:
ग्रामीण क्षेत्र में अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है।

प्रश्न 2.
ग्रामीण क्षेत्र की मुख्य गैर-कृषि उत्पादन गतिविधियाँ कौन-कौन सी हैं?
उत्तर:
ग्रामीण क्षेत्र में गैर-कृषि उत्पादन गतिविधियों में पशुपालन, लघुस्तरीय विनिर्माण कार्य, दुकानदारी, परिवहन इत्यादि प्रमुख हैं।

प्रश्न 3.
वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन हेतु किन-किन साधनों की आवश्यकता पड़ती है?
उत्तर:
वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन हेतु चार प्रमुख साधन-(1) भूमि, (2) श्रम, (3) भौतिक पूँजी एवं (4) मानवीय पूँजी हैं।

प्रश्न 4.
स्थायी पूँजी से आपका क्या अभिप्राय है?
उत्तर:
उत्पादन में औजार, मशीनें, भवन आदि का कई वर्षों तक प्रयोग होता है, इन्हें ही स्थायी भौतिक पूँजी कहा जाता है।

प्रश्न 5.
भौतिक पूँजी को कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है?
उत्तर:
भौतिक पूँजी को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-(1) स्थायी पूँजी (2) कार्यशील पूँजी।

प्रश्न 6.
उत्पादन के कारक किसे कहते हैं?
उत्तर:
उत्पादन भूमि, श्रम और पूँजी को संयोजित करके संगठित होता है, जिन्हें उत्पादन के कारक कहा जाता है।

प्रश्न 7.
उत्पादन के साधन कौन-कौन से हैं?
उत्तर:

उत्पादन के साधन-(1) भूमि (2) श्रम (3)

प्रश्न 8.
भूमि को मापने की मापक इकाई क्या है?
उत्तर:
भूमि को मापने की मापक इकाई हेक्टेयर है।

प्रश्न 9.
रबी एवं खरीफ की दो-दो फसलों के नाम बताइए।
उत्तर:
रबी की फसलें-गेहूँ, जौ। खरीफ की फसलें-ज्वार, बाजरा।

प्रश्न 10.
बहुविध फसल प्रणाली किसे कहा जाता है?
उत्तर:
एक वर्ष में किसी भूमि पर एक से ज्यादा फसल पैदा करने को बहुविध फसल प्रणाली कहा जाता है।

प्रश्न 11.
हरित क्रान्ति के अन्तर्गत अधिक उपज किस प्रकार संभव हुई?
उत्तर:
हरित क्रान्ति के अन्तर्गत अधिक उपज केवल अति उपज प्रजातियों वाले बीजों, सिंचाई, रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों आदि के संयोजन से ही संभव हो पाई।

प्रश्न 12.
लघु अथवा छोटी कृषि जोतों का आकार कितना होता है?
उत्तर:
लघु अथवा छोटी कृषि जोतों का आकार दो हेक्टेयर से कम होता है।

प्रश्न 13.
हरित क्रान्ति का एक दुष्प्रभाव बताइए।
उत्तर:
हरित क्रान्ति में अधिक रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग करने से मिट्टी की उर्वरकता कम हो गई।

प्रश्न 14.
वृहद् कृषि जोतों का आकार कितना होता है?
उत्तर:
वृहद् कृषि जोतों का आकार 10 हेक्टेयर से अधिक होता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
कृषि भूमि मापने की मानक इकाई का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
उत्तर:

https://www.evidyarthi.in/

भारत में कृषि भूमि को मापने की मानक इकाई 'हेक्टेयर' है। गाँवों में भूमि को मानने के लिए क्षेत्रीय इकाइयों, जैसे-बीघा, गुंठा आदि का प्रयोग भी किया जाता है, लेकिन मानक इकाई हेक्टेयर ही है। एक हेक्टेयर, 100 मीटर की भुजा वाले वर्ग के क्षेत्रफल के बराबर होता है।

प्रश्न 2.
भारत में सिंचाई का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
उत्तर:
भारत में नलकूपों, नहरों, तालाबों तथा कुओं द्वारा सिंचाई की जाती है। भारत में सभी जगह सिंचाई की समान व्यवस्था नहीं है। देश के नदीय मैदानों तथा तटीय क्षेत्रों में सिंचाई की अच्छी व्यवस्था है। इसके विपरीत पठारी क्षेत्रों, जैसे- दक्षिणी पठार में सिंचाई कम होती है। आज भी देश के कुल कृषि क्षेत्र के लगभग आधे क्षेत्र में ही सिंचाई होती है। शेष क्षेत्र मुख्यतः वर्षा पर निर्भर है।

प्रश्न 3.
रासायनिक उर्वरकों से होने वाली हानियाँ बतलाइये।
उत्तर:
रासायनिक उर्वरकों से निम्न हानियाँ हैं-

- रासायनिक उर्वरकों के खनिज पानी में घुलकर पौधों को तुरन्त उपलब्ध तो हो जाते हैं, लेकिन मिट्टी इन्हें लम्बे समय तक धारण नहीं कर पाती है।
- रासायनिक उर्वरक मिट्टी से निकलकर भौम जल, नदियों तथा तालाबों को प्रदूषित करते हैं।
- रासायनिक उर्वरक मिट्टी में उपस्थित जीवाणुओं तथा सूक्ष्म अवयवों को नष्ट कर सकते हैं।
- इनके प्रयोग के पश्चात् मिट्टी पहले की तुलना में कम उपजाऊ रह जाती है।

प्रश्न 4.
ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न उत्पादन क्रियाओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न उत्पादन क्रियाओं अथवा गतिविधियों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- कृषि क्रियाएँ एवं गैर-कृषि उत्पादन क्रियाएँ । ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि मुख्य उत्पादन क्रिया है तथा गाँवों के लगभग तीन-चौथाई लोग कृषि कार्यों में लगे हुए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के अतिरिक्त अन्य कई गैर-कृषि उत्पादन क्रियाएँ भी होती हैं जिनमें लगभग एक-चौथाई लोग कार्यरत हैं। इन क्रियाओं में मुख्य रूप से पशुपालन, लघुस्तरीय विनिर्माण कार्य, दुकानदारी, परिवहन, परम्परागत एवं कुटीर उद्योग आदि क्रियाएँ सम्मिलित हैं।

प्रश्न 5.
पालमपुर में बहुविध फसल प्रणाली को समझाइये।
उत्तर:
एक वर्ष में किसी भूमि पर एक से ज्यादा फसल पैदा करने को बहुविध फसल प्रणाली कहा जाता है। यह भूमि के किसी एक टुकड़े में उपज बढ़ाने की सबसे सामान्य प्रणाली है। पालमपुर में सभी किसान इस प्रणाली के अनुसार कम-से-कम दो मुख्य फसलें पैदा करते हैं। कई किसान तीसरी फसल के रूप में आलू भी पैदा कर रहे हैं।

प्रश्न 6.
भौतिक पूँजी के अन्तर्गत कौन-कौनसी मदों को सम्मिलित किया जाता है?
उत्तर:
भौतिक पूँजी उत्पादन का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। भौतिक पूँजी को निम्न दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता

है-
(1) स्थायी पूँजी-उत्पादन क्रिया में औजारों, मशीनों तथा भवनों का कई वर्षों तक प्रयोग किया जाता है, जिसे स्थायी पूँजी कहते हैं।

(2) कार्यशील पँजी-उत्पादन प्रक्रिया के अन्तर्गत कई प्रकार के कच्चे माल की आवश्यकता पड़ती है तथा व्यवसाय की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ नकद की आवश्यकता भी पड़ती है। अत: कच्चे माल एवं नकद को कार्यशील पूंजी कहा जाता है।

प्रश्न 7.
'हरित क्रान्ति' पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
भारत में कृषि में क्रान्तिकारी परिवर्तनों हेतु 1960 के दशक के मध्य में हरित क्रान्ति की नीति अपनाई गई। इस नीति में कृषि के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि करने हेतु कई आधुनिक विधियों को अपनाया गया। हरित क्रान्ति की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि इसमें उच्च उत्पादकता वाले (एच.वाई.वी.) बीजों का उपयोग किया गया। इस नीति में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के उपयोग में वृद्धि हुई, साथ ही सिंचाई सुविधाओं में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इन सबका कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

प्रश्न 8.
हरित क्रान्ति से क्षेत्रीय असमानता में वृद्धि हुई है? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
भारत में हरित क्रान्ति के अन्तर्गत आधुनिक विधियों एवं कृषि आगतों का उपयोग किया जाता है। इनके उपयोग के लिए अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है। इसलिए छोटे किसान इसका लाभ नहीं उठा पाते हैं। इसका लाभ बड़े किसानों ने ही उठाया है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में असमानता बढ़ी है। धनी किसान और अधिक धनी हुए हैं और बेरोजगारी बढने से गरीब किसान और अधिक गरीब हुए हैं।

प्रश्न 9.
कृषि जोतों के आधार पर कृषि भूमि के वर्गीकरण को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
भारत में कृषि जोतों के आधार पर कृषि जोतों को मुख्य रूप से तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है-

- छोटी जोत-छोटी जोतों के अन्तर्गत उन जोतों को शामिल किया जाता है, जिनका आकार 2 हेक्टेयर से कम होता है। यह छोटे कृषकों के पास होती है तथा देश की अधिकांश कृषि भूमि छोटी जोतों के अन्तर्गत ही आती है।
- मध्यम जोतें-मध्यम जोतों के अन्तर्गत वे कृषि भूमि आती हैं जिनका आकार 2 हेक्टेयर से अधिक होता है किन्तु 10 हेक्टेयर से कम होता है।
- वृहद् जोते-बड़े जोतों के अन्तर्गत वे कृषि भूमि आती हैं जिनका आकार 10 हेक्टेयर से अधिक होता है, यह जोतें ज्यादातर बड़े कृषकों के पास होती हैं।

प्रश्न 10.
ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे कृषकों की विभिन्न समस्याओं का उल्लेख कीजिए।
उत्तर:
ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश छोटे कृषक हैं. उनके सम्मख कई प्रकार की समस्याएँ हैं। इनमें निम्न मख्य हैं-

https://www.evidyarthi.in/

- छोटे कृषकों के पास इतनी कम भूमि होती है कि वे अपने परिवार की आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाते अत: उन्हें अन्य बड़े कृषकों के यहाँ मजदूरी करनी पड़ती है तथा बड़े कृषकों द्वारा उन्हें अत्यन्त कम मजदूरी दी जाती है।
- वर्तमान में कृषि कार्यों हेतु अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता पड़ती है अतः उन्हें साहूकारों एवं व्यापारियों से ऋण लेना पड़ता है तथा साहूकार एवं व्यापारी अत्यधिक ब्याज लेते हैं तथा अन्य भी कई तरीकों से शोषण करते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्र में छोटे कृषकों के पास कृषि हेतु आधुनिक आगतों की भी कमी रहती है जिस कारण उनके खेतों में उत्पादन मात्रा भी कम होती है।

प्रश्न 11.
पिछले कुछ वर्षों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कई सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।
उत्तर:
भारत में पिछले कुछ वर्षों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कई सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा एवं शिक्षा सुविधाओं में काफी विस्तार हुआ। पिछले वर्षों में गाँवों में बिजली की पूर्ति में काफी विस्तार हुआ है, अब अधिकांश घरों में बिजली है तथा सिंचाई सुविधाओं में भी उल्लेखनीय विस्तार हुआ है, अब ज्यादातर कुओं पर बिजली से चालित नलकूप हैं । कृषि क्षेत्र में भी कई आधुनिक विधियों एवं आगतों का प्रयोग किया जाने लगा है। ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि क्रियाओं, जैसे-डेयरी, पशुपालन, लघुस्तरीय विनिर्माण कार्यों, दुकानदारों, परिवहन आदि का भी उल्लेखनीय विकास हुआ है जिससे गाँवों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है।